पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे के जीवन का
उल्लेखनीय घटनाक्रम

सन् १८६०—जन्म : श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, शुक्रवार १० अगस्त, प्रातः ८-३० बजे। स्थान : बाणगंगा, बालकेश्वर, बम्बई।

१८७५—श्री वल्लभदास गोपालगिरी तथा बुवा दामुलजी से सितार-वादन की शिक्षा का प्रारम्भ।

१८७६—श्री जीवनलाल महाराज के ग्रंथ-संग्रह से संगीत के साहित्य का अवलोकन।

१८७८—श्री हार्ट साहब, मजिस्ट्रेट स्मॉल काज कोर्ट से परिचय और उनका सहाय्य।

१८८१—श्री शांताराम पाटकर से परिचय, आर्थिक अड़चनों के कारण कुछ स्थानों पर छोटी-मोटी नौकरियाँ करते रहे।

१८८४—गायनोत्तेजक मण्डली का सदस्यत्व। श्री शपूर स्पेन्सर से घनिष्टता।

१८८५—एल्फिन्स्टन कॉलेज, बम्बई से बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण। पिता जी (श्री नारायण गोविन्द भातखण्डे) का स्वर्गवास और कौटुम्बिक दायित्व का सम्पूर्ण भार।

१८८७—एल-एल० बी० परीक्षा उत्तीर्ण।

१८८७ से १८८९—कराची हाईकोर्ट में वकालत। सिन्ध हैदराबाद, लाहौर, कच्छ आदि प्रदेशों का भ्रमण।

१८८९ से १९१०—बम्बई में वकालत। श्री शांताराम पाटकर की जायदाद की व्यवस्था। सुकथनकर परिवार की देख-भाल का दायित्व।

१८८४ से १९९०—गायनोत्तेजक मंडली में श्री रावजीबुवा बेलबागकर से ३०० ध्रुवपद कण्ठस्थ किये। उस्ताद अली हुसेन तथा विलायत हुसेन से १००-१५० ख्यालों की शिक्षा ली। इसके अतिरिक्त दिल्ली, लखनऊ, आगरा, जयपुर,

ग्वालियर, पटियाला, बड़ौदा, दक्षिण हैदराबाद के सभी प्रमुख गायक-वादकों के प्रदर्शन सुने, रागरूपों पर चर्चा की; जिससे प्रेरित होकर रागदारी संगीत की शास्त्रीय सुसम्बद्धता सिद्ध करने की इच्छा जागृत हुई।

१८९० से १९०५—जर्मन, ग्रीक, अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, तेलुगु, बंगला और गुजराती भाषा में उपलब्ध प्राचीन, अर्वाचीन संगीत विषयक साहित्य का संकलन, पठन, एवं मनन। गायनोत्तेजक मण्डली के सदस्यों को व्याख्यान एवं सुबोध पाठ देते रहे और वहाँ पर नियुक्त विद्वानों से शिक्षा लेते रहे। डॉ० बर्नें तथा अन्य विदेशी लेखकों के द्वारा निर्मित यूरोपीय संगीत के साहित्य की विपुलता, विशालता से प्रेरणा पाकर ऐसा ही साहित्य सृजन भारतीय संगीत में किया जाय—इस उद्देश्य से तीर्थयात्रा के बहाने विभिन्न प्रदेशों की सद्यःस्थिति जानने के लिये देशव्यापी भ्रमण की योजना बनाई।

१८९५—गीत-संग्रह का आद्यस्रोत श्री रावजीबुवा बेलबागकर का स्वर्गवास।

१८९६—सूरत, भड़ोच, बड़ौदा, नवसारी, अहमदाबाद, राजकोट, भावनगर आदि स्थानों का भ्रमण।

१८९८—ज्येष्ठ शिष्य श्री वाड़ीलाल शिवराम, रतनसी लीलाधर, नजीर खाँ आदि मित्रों के सहकार्य का प्रारम्भ।

१९००—एल्फिन्स्टन हाईस्कूल में शिक्षण कार्य। धर्मपत्नी श्रीमती मधुबाई का स्वर्गवास और सांसारिक विरक्ति। लगभग इसी समय जयपुर घराने के गायक श्री आशिक अली एवं अहमद अली से गीत-संग्रह का प्रारम्भ।

१९०३—एक मात्र पुत्री सीताबाई का निधन और पारिवारिक दायित्व से आंशिक मुक्ति।

१९०४—दक्षिण भारत की यात्रा। मद्रास, तंजोर, इट्टैयापुरम्, मदुरा, रामनद, त्रिवेन्द्रम, त्रिचनापल्ली, मैसूर, बंगलोर, के ग्रन्थागारों से ग्रंथ सङ्कलन, विद्वानों से चर्चा, विचारों का आदान-प्रदान, गायन-वादन सुनकर प्रसङ्गानुसार उत्तरी पद्धति पर व्याख्यान इत्यादि। दक्षिण की इस यात्रा में दक्षिणोत्तर सङ्गीत पद्धतियों के एकात्मकता के सूत्र, मेल तज्जन्य राग-वर्गीकरण की उपयोगिता एवं हिन्दुस्तानी सङ्गीत की विशाल एवं सुदृढ़ पार्श्वभूमि के विषय में अपने पूर्व विचारों को पुष्टि। इट्टैयापुरम् में पं० सुब्राम दीक्षित के परिचय से प्रभावित होकर प्राचीन ग्रन्थ साहित्य पर उपयुक्त चर्चा तथा इन्हीं के पूर्वज व्यंकटेश्वर दीक्षित द्वारा लिखित 'चतुर्दण्डिप्रकाशिका' की हस्तलिखित प्रति की प्राप्ति। रागों का स्वरूप, बर्ताव आदि बताने वाले गीत प्रकार की अर्थात् 'लक्षणगीत' की उपलब्धि और इस कार्य में पदार्पण।

१९०६ से १९०७—मनरंग घराने के जयपुर वाले उस्ताद आशिक अली एवं अहमद अली बन्धु द्वयों से लगभग ३०० चीजें लिपिबद्ध कराईं, उनका प्रत्यक्ष रेकार्डिंग कराया। तदुपरान्त इन दोनों के पिता उस्ताद मुहम्मद अली खाँ कोठीवाल (हररंग) से इनकी शुद्धता पर स्वीकृति प्राप्त की। विवादास्पद एवं अप्रसिद्ध रागस्वरूपों की जानकारी प्राप्त की। इनके कुछ गीतों पर जुगुल-बंदियाँ बाँधना प्रारम्भ किया और उस्ताद से अपने लक्ष्यपूर्ति पर आशीर्वाद प्राप्त किये। कुछ ही समय बाद गुरुदेव का स्वर्गवास हुआ। परन्तु आशिक अली-अहमद अली का सहयोग आगे भी मिलता रहा।

१९०७—भारतवर्ष के पूववर्ती स्थलों का भ्रमण। नागपुर, कलकत्ता, जगन्नाथपुरी, विजयानगरम् तथा दक्षिण हैदराबाद आदि स्थलों के प्रमुख ग्रंथालयों को भेंट; सङ्गीतज्ञों से परिचय, चर्चा एवं उपयुक्त साहित्य का संग्रह। ख्यातनाम सङ्गीत शास्त्रियो से भेंट व उनके बहुचर्चित ज्ञान की विफलता की उपलब्धि। पं० काशीनाथ उर्फ अप्पा तुलसी तथा राजा सौरीन्द्र मोहन टैगोर से घनिष्टता एवं विचारों के आदान-प्रदान से पारस्परिक आदर-भाव की वृद्धि। श्री अप्पा शास्त्री तुलसी को ग्रंथ निर्माण में सहायता का आश्वासन।

१९०८—देश के उत्तरी अंचल का भ्रमण। जबलपुर, इलाहाबाद, बनारस, गया, मथुरा, आगरा, लखनऊ, दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर इत्यादि ग्रंथालयों में साहित्य की छानबीन, पण्डितों से चर्चा, गायकों से साक्षात्कार। बीकानेर के अनूप ग्रन्थ संग्रहालय में बहुत-सा उपयुक्त साहित्य प्राप्त किया। बाड़ीलाल जी की मध्यस्थता से जाकिरुद्दीन व अलाबन्दे का आलाप गायन सुनकर प्रभावित हुए। प्रसिद्ध शिष्य श्री शंकरराव कारनाड ने श्रीकृष्ण नारायण रातांजनकर व उनके कुटुम्बियों का परिचय कराया।

१९०९—इन भ्रमणों के निष्कर्ष में द्वादश स्वरित सप्तक ही आज का एकमात्र सप्तक है। स्वरांतर निश्चिति में श्रुति केवल कल्पनामात्र है और उनका प्रत्यक्ष उपयोग किसी भी समय में हुआ ही नहीं था, वर्तमान रागरूप ग्रंथों से पर्याप्त भिन्न हो चुके हैं, सङ्गीत निरन्तर प्रगति पथ पर ही है, केवल उसके लक्षण, नियम आज की परिस्थिति में समझाने वाले किसी नवीन ग्रंथ का निर्माण होना आवश्यक है—ऐसा दृढ़ मत कायम हुआ। ग्रन्थों के निचोड़ का उपयोग करते हुये प्रतिष्ठित गायक-वादकों से प्राप्त साहित्य पर आधारित 'लक्ष्य' अर्थात् प्रचलित सङ्गीत की सुसम्बद्ध व्याख्या करने वाला ग्रन्थ "श्रीमल्लक्ष्यसङ्गीतम्" के निर्माण में पर्याप्त प्रगति। रागों का दस थाटों में विभाजन करते हुए उन रागों के प्रत्यक्ष उदाहरण, उनका स्वरूप, चलन स्पष्ट करने वाली तालबद्ध सरगमों का संग्रह

'स्वरमालिका' का प्रकाशन। परममित्र एवं सहयोगी श्री दत्तात्रेय केशव जोशी से परिचय, जिसके फलस्वरूप श्री गणपति बुवा मिलवड़ीकर से ४०० गीत प्राप्त हुए।

१९१०—'चतुर' नामाभिधान सहित सुबोध संस्कृत भाषा में निर्मित 'श्रीमल्लक्ष्य-सङ्गीतम्' नामक अपने सिद्धान्त ग्रन्थ का प्रकाशन।

श्रीमल्लक्ष्यसङ्गीतम् में प्रतिपादित सिद्धान्त जन-साधारण तक पहुंचाने के उद्देश्य से 'विष्णुशर्मा' नामाभिधान सहित मातृभाषा मराठी में 'हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति' ग्रन्थमाला की विस्तृत योजना का प्रारम्भिक अंश अर्थात् प्रथम भाग का प्रकाशन। दक्षिण के पं० रामामात्य द्वारा रचित 'स्वरमेल कलानिधि' का अनुवाद सहित प्रकाशन। 'सङ्गीत पारिजात', 'रागविबोध', 'सारामृतोद्धार' की श्रुति-स्वर चर्चा पर ध्यान आकृष्ट करते हुए उनका प्रकाशन।

१९११—प्रिय शिष्य श्री० ना० रातांजनकर को प्रत्यक्ष शिक्षा देना प्रारम्भ किया। अपने मित्रों को ग्रन्थ-प्रकाशन में प्रेरित किया। श्री रतनसी लीलाधर, बाड़ीलाल शिवराम की सहायता से 'सङ्गीत रत्नाकर' तथा 'सङ्गीत दर्पण' के स्वराध्यायों का मूलपाठ सहित गुजराती में भाषान्तर एवं प्रकाशन।

अकबरपुर के ठाकुर नवाब अली खाँ से पत्र-व्यवहार और परिचय। फलस्वरूप काला नजीर खाँ को स्वरचित लक्षणगीत तथा लक्ष्य सङ्गीत के मूलभूत तत्वों की शिक्षा दी, जिसे ठाकुर नवाब अली खाँ द्वारा लिखित 'मुआरिफुन्नगमात' में सन् १९१३ में प्रकाशित किया। 'मुआरिफुन्नगमात' को ठाकुर साहब ने अपने उस्ताद पं० भातखण्डे को समर्पित किया था।

स्वरचित 'अष्टोत्तरशततालालक्षणम्' शीर्षक से ताल शास्त्र पर संस्कृत भाषा में एक पुस्तिका का प्रकाशन। 'राग मालिका' का क्रमवार प्रकाशन जिसमें स्वरचित लक्षणगीत तथा अन्य गीत प्रकाशित किये। विद्वान् मित्र श्री अप्पा तुलसी द्वारा रचित 'रागकल्पद्रुमांकुर' का प्रकाशन।

१९१२—उत्तरी सङ्गीत पर आधारित पुण्डरीक विट्ठल के 'सद्रागचन्द्रोदय' का प्रकाशन। अपने 'लक्ष्यसङ्गीत' पर आधारित कतिपय ग्रन्थ जैसे 'रागचन्द्रिका', 'चन्द्रिकासार' की रचना में पं० अप्पा तुलसी को प्रेरित करते हुए उन्हें प्रकाशित किया।

१९१३—हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति के भाष्य ग्रन्थों का आगामी लेखन।

१९१४—हिन्दुस्तानी सङ्गीत पद्धति के द्वितीय भाग का प्रकाशन। अप्पा तुलसी द्वारा लिखित 'अभिनवतालमन्जरी' का प्रकाशन। 'राग लक्षणम्', पुण्ड-

रीक विट्ठल की 'रागमाला' एवं 'रागमन्जरी' का प्रकाशन। 'गुड लाइफ लीग' के तत्वावधान में सङ्गीत की कक्षाएँ प्रारम्भ कीं। 'शारदा सङ्गीत मण्डल' की स्थापना।

१६१४से१५—हिज हाईनेस महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ से मुलाकातें तथा बड़ौदे के शासकीय सङ्गीत विद्यालय के पुनर्गठन की योजना।

१६१५से१६—बड़ौदे में अखिल भारतीय सङ्गीत परिषद् के प्रथम अधिवेशन की योजना बनाना और उसे कार्यान्वित करना। इसी अधिवेशन में अपना आज तक का सभी शोधकार्य विद्वानों के सम्मुख रखकर श्रुति, स्वर, मेल एवं तज्जन्य रागवर्गीकरण, ग्रंथगत एवं प्रचार के सङ्गीत का साम्य और भेद आदि सभी निष्कर्षों पर स्वीकृति प्राप्त की। श्रुतिवाद निरर्थक है ऐसी राय दक्षिण एवं उत्तर के विद्वानों ने एकमत से दी। जिससे सप्तक में स्वरों के निर्धारण हेतु श्रुति का अस्तित्व सदा के लिये मिट गया। उदयपुर के जाकिरुद्दीन खान को गायकों का प्रतिनिधि चुना जाकर उनके द्वारा गाये हुए काफी राग के आरोहावरोह ने यह सिद्ध कराया कि सूक्ष्म स्वरांतरों सहित बनाया हुआ हार्मोनियम भी भारतीय रागों की चाल-ढाल को हूबहू व्यक्त नहीं कर सकता। स्वरों का लेखन करने की पद्धति की उपयोगिता सिद्ध हुई। अधिवेशन की अध्यक्षता ठाकुर नवाब अली खान ने की थी। तानसेन प्रणाली जो रामपुर के कतिपय कलाकारों के पास सुरक्षित है, उसका उपयोग हिन्दुस्तानी सङ्गीत की एकीकृत पद्धति की समृद्धि के लिये कराने के उद्देश्य से उस प्रणाली के गीतों का संग्रह स्वर-लिपि एवं रिकार्डों द्वारा कराया जाय, ऐसा भी यहाँ पर विचार किया गया। तदनुसार ठाकुर नवाब अली और काले नजीर खाँ के प्रयत्नों से भातखण्डे जी का सम्पर्क रामपुर दरबार से हुआ।

श्री भास्करराव खाण्डेपारकर से परिचय तथा ग्वालियर प्रणाली के गीतों का पुनः एक बार मनन।

गीतमालिका के २२ भागों का क्रमशः प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।

पं० मदनमोहन मालवीय से परिचय तथा बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय की स्थापना के अवसर पर सङ्गीत की सामूहिक शिक्षा की आवश्यकता की ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया।

१६१७—बड़ौदा नरेश श्री सयाजीराव गायकवाड़ के साथ उटकमंड की यात्रा। इसी यात्रा में श्री सयाजीराव को अपने राज्य में सङ्गीत की क्रमवार शिक्षा के लिये एक विद्यालय की स्थापना के लिये प्रेरित किया। अपनी नूतन शिक्षा पद्धति तथा सङ्गीत विषयक अन्यान्य कार्यों का परिचय देकर उनकी सहानुभूति प्राप्त की। मैसूर के युवराज से सम्पर्क। श्री अप्पा शास्त्री तुलसी द्वारा लिखित 'सङ्गीत सुधाकर' का प्रकाशन। श्री

भास्करराव खाण्डेपारकर के अनुरोध पर ग्वालियर की भेंट। बालासाहब गुरुजी, शंकर पंडित तथा उनके बंधु एकनाथ पंडित एवं पुत्र कृष्णराव पंडित, शिष्य राजाभैया पूछवाले, प्रसिद्ध ध्रुवपद गायक वामनबुवा देशपांडे के पुत्र विष्णुबुआ देशपाण्डे, कृष्णराव दाते आदि से भेंट एवं अपने कार्य में सहानुभूति प्राप्त करने के प्रयत्न। अंत में श्री भास्करराव की मध्यस्थता से सरदार बलवन्तराव भैया शिंदे से परिचय। ग्वालियर नरेश से भेंट करा देने का आश्वासन प्राप्त हुआ।

इसी वर्ष ग्वालियर नरेश श्री माधवराव सिंधिया से उनके निमन्त्रण पर शिवपुरी में भेंट। ग्वालियर की इतिहास प्रसिद्ध परम्परा निरन्तर कायम रखने के लिये श्री माधवराव सिंधिया की चिंताओं को दूर करने का आश्वासन दिया। विचार-विमर्ष के बाद निकट-भविष्य में ग्वालियर में एक सङ्गीत विद्यालय स्थापित करने की पूर्वपीठिका स्वयं ग्वालियर नरेश की तीव्र इच्छानुसार तैयार हुई।

बड़ौदा एवं ग्वालियर की चर्चा के फलस्वरूप दोनों राज्यों के कतिपय चुने हुए सङ्गीतज्ञ बम्बई भेजे गए, जहाँ पर उन्होंने पं० भातखण्डे से उनकी नूतन शिक्षा-प्रणाली, स्वरलिपि लेखन तथा 'लक्ष्यसङ्गीत' के सिद्धान्तों का अध्ययन किया। इन्हीं प्रशिक्षित महानुभावों को उनके अपने नगरों के सङ्गीत विद्यालयों के शिक्षण का भार आगे चलकर सौंप दिया गया।

इसी वर्ष भारत-धर्म-मण्डल ने उन्हें 'सङ्गीत-कलानिधि' की महानतम् उपाधि से विभूषित कर उनकी सङ्गीत-सेवा का गौरव किया।

माता श्री बालूबाई का स्वर्गवास और पारिवारिक दायित्व से मुक्ति।

१९१८—हृदयकौतुक, हृदयप्रकाश, रागतरंगिणी, राग तत्वविबोध, सुगमरागमाला चतुर्दण्डिप्रकाशिका आदि ग्रन्थों का प्रकाशन।

देहली में अखिल भारतीय सङ्गीत परिषद् के द्वितीय अधिवेशन का आयोजन एवं संचालन। अधिवेशन की अध्यक्षता रामपुर के तत्कालीन नवाब हिज हाईनेस श्री हामिद अली खान बहादुर ने की थी। रामपुर परम्परा के गीतों का आधार लेकर प्रचलित दुष्कर रागों के स्वरूपों पर खुली चर्चा हुई। धुरन्धर गायकों के विचार संकलित किये गये। सारंग, मल्हार एवं तोड़ी प्रकारों पर विद्वानों का मतैक्य एक उल्लेखनीय सफलता थी। तानसेन परम्परा के गीत जो उस्ताद वजीर खाँ, मुहम्मद अली खाँ एवं नवाब छम्मन खाँ के पास हैं, उन्हें ध्वनिमुद्रित तथा स्वरलिपिबद्ध कराते हुए प्रकाशित भी किया जाय, ऐसा निश्चित हुआ। नेशनल अकाडमी आफ़ म्यूज़िक की स्थापना पर चर्चा एवं निर्णय। इन सभी

कार्यों में श्री एस० एन० कार्नाड, ठाकुर नवाब अली खाँ, नवाब छम्मन खाँ साहब तथा श्री ब्रिजकिशन कौल ने बहुत सहयोग दिया। दरियाबाद के ताल्लुकेदार राय राजेश्वर बली तथा राय उमानाथ बली से भेंट एवं उत्तर प्रदेश में सङ्गीत के प्रचार की योजना पर विचार।

रामपुर के नवाब हिज हाईनेस हामिद अली खाँ के गण्डाबन्ध शागिर्द हुए, जिसके परिणाम स्वरूप तानसेन परम्परा में विधिवत् प्रवेश हो सका।

ग्वालियर में माधव सङ्गीत महाविद्यालय की स्थापना व उसके प्रारम्भिक काम-काज की व्यवस्था।

१९१९—इस विद्यालय की स्थापना के छः मास बाद छात्रों का एक अनुपम प्रदर्शन वहाँ के गुणीजनों के सामने कराया गया। जिसमें स्वरलिपि के माध्यम से घरानेदार विलम्बित लय की चीजें भी अत्यन्त अल्पसमय में बिना किसी कठिनाई के हूबहू गाई जा सकती हैं, यह सप्रयोग सिद्ध किया। वहाँ के गुणीजनों से अपने अभिनव प्रयोगों पर मान्यता प्राप्त की। वस्तुतः इसी समय से विद्यालय के संचालन की सारी जिम्मेदारी विश्वासपात्र सहकारी एवं शिष्य श्री राजाभैया पूछवाले को सौंप दी थी।

अखिल भारतीय सङ्गीत परिषद् का तृतीय अधिवेशन वाराणसी में बुलाया जाकर शेष अन्य अप्रचलित रागों के स्वरूप और उनके बर्ताव कायम किये गये। श्री शिवेन्द्रनाथ बसु का सहकार्य।

इसी वर्ष हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति की 'क्रमिक पुस्तक मालिका' का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ। भावभट्ट विरचित अनूप संगीत रत्नाकर तथा अनूप संगीतांकुश का प्रकाशन हुआ।

१९२०—बड़ौदा एवं ग्वालियर के विद्यालयों के लिये पाठ्यक्रम का निर्धारण पाठ्य पुस्तकों के निर्माण की योजना बनाई गई। पं० काशीनाथ उर्फ अप्पा शास्त्री तुलसी का स्वर्गवास।

१९२१—हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति की 'क्रमिक पुस्तक मालिका' के द्वितीय भाग का तथा संस्कृत भाषा में स्वरचित 'अभिनवरागमंजरी' का प्रकाशन। भावभट्ट विरचित 'अनूपसंगीतविलास' का प्रकाशन कराया।

१९२२—विभिन्न व्यक्तियों से प्राप्त घरानेदार गीतों का भाषा एवं राग की दृष्टि से उन-उन गायक-वादकों के साथ तथा शास्त्री, पंडित, मौलवीयों से परामर्श लेकर शुद्धिकरण किया गया। इस कार्य के लिये हरिद्वार में एक सेमिनार का आयोजन हुआ, जहाँ पर गीतों के सर्वमान्य पाठ निश्चित किये गये। श्री राजाभैया पूछवाले को उनके विद्यालय के लिये पदवी परीक्षा का पाठ्यक्रम तैयार करके दिया।

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति की 'क्रमिक पुस्तक मालिका' के तृतीय भाग का प्रकाशन। परम मित्र छम्मन साहब का निधन।

१९२३—'क्रमिक पुस्तक मालिका' के चतुर्थ भाग का प्रकाशन। माधव सङ्गीत महाविद्यालय में स्नातकीय स्तर की परीक्षा का संचालन। इसी परीक्षा के शैक्षणिक स्तर एवं प्रथा को बाद में अन्य स्थानों के लिये भी स्वीकृत किया गया।

१९२४—ग्वालियर में सङ्गीत महाविद्यालय के प्रथम दीक्षान्त समारोह का आयोजन। परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों को प्रथम बार प्रमाण-पत्र दिये गये, जो सङ्गीत शिक्षा में आधुनिक युग का श्रीगणेश था। समारोह की अध्यक्षता हिज हाईनेस माधवराव सिंधिया ने करते हुए पं० भातखंडे का बहुमूल्य वस्त्रादि से सम्मान किया तथा नूतन शिक्षा प्रणाली द्वारा केवल पांच वर्षों में कुशल गायक व शिक्षक निर्माण करने की उनकी प्रतिज्ञा यथार्थ में सफल हो जाने के उपलक्ष्य में निःस्वार्थ प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

१९२५—अखिल भारतीय संगीत परिषद् के चतुर्थ एवं पंचम अधिवेशन लखनऊ में आयोजित करते हुए मैरिस कालेज आफ हिन्दुस्तानी म्यूज़िक की स्थापना पर अंतिम निर्णय लिये गये। इन सभी अधिवेशनों के वे स्थायी सचिव रहे। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर से पत्र-व्यवहार, व्यक्तिगत वार्तालाप होकर उनकी शिक्षण संस्था के संगीत विभाग की योजना, पाठ्यक्रम निर्धारण आदि में सहयोग दिया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से भेंट व संगीत शिक्षा के सम्बन्ध में विचार विनिमय।

१९२६—मैरिस कालेज आफ म्यूज़िक, लखनऊ की स्थापना व दीर्घकाल तक लखनऊ में निवास। विद्वानों से चर्चा, लेखन, पठन, पाठन एवं कालेज का भवितव्य सुदृढ़ करने के प्रयास। उस्ताद वजीर खाँ का निधन। ग्वालियर के हिज हाईनेस महाराजा माधवराव सिंधिया का स्वर्गवास।

१९२७—महारानी साहिबा बड़ौदा के साथ काश्मीर की यात्रा, ग्रंथालयों से भेंट व फकीरुल्ला के 'रागदर्पण' की खोज। तानसेन खानदान के अंतिम वंशज उस्ताद मुहम्मद अली खाँ का स्वर्गवास। श्री गणपतिबुवा मिलवड़ीकर का स्वर्गवास।

१९२७-३२—ग्वालियर कालेज का कार्य संतोषप्रद होने के कारण वर्ष में एक बार निरीक्षण, मार्ग दर्शन परीक्षा संचालन करते रहे। परन्तु लखनऊ के नव संस्थापित कालेज में वर्ष में दो बार निजी खर्च से जाकर वहाँ का निरीक्षण, मार्ग दर्शन एवं भावी योजनाएँ बनाने का कार्य करते रहे।

१९२८—मैरिस कालेज आफ हिन्दुस्तानी म्यूज़िक लखनऊ के लिये नये भवन का अनुदान। कालेज की सम्पूर्ण व्यवस्था अपने प्रिय शिष्य श्रीकृष्ण

नारायण रातांजनकर को सौंप दी। 'संगीत भाव' के लेखक धरमपुर के महाराणा विजय देव सिंह से परिचय एवं चर्चाएँ। लगभग इसी समय से वृद्धावस्था अनुभव करने लगे। स्वास्थ्य भी गिरता गया।

१९२९से१९३१—हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति (भाष्य ग्रंथ) के चतुर्थ भाग का तथा 'क्रमिक पुस्तक मालिका' के पंचम एवं षष्ठ भाग का लेखन।

१९३०—ग्वालियर के माधव संगीत महाविद्यालय के वार्षिक दीक्षान्त समारोह पर राज्य सरकार की ओर से पंडित भातखंडे का अभूतपूर्व सम्मान किया गया। जिसमें उनकी वास्तविक रूप से पूजा करते हुए उन्हें ज़रतारी वस्त्र तथा एक सहस्र रौप्य राज्य-मुद्राएं समर्पित की गईं।

१९३२—लगभग साढ़े ग्यारह सौ पृष्ठों में 'हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति' का चतुर्थ एवं अंतिम भाग प्रकाशित किया। ग्वालियर, लखनऊ आदि विद्यालयों की परीक्षा संचालन का अन्तिम दौरा।

१९३३—प्रिय शिष्य एवं सहयोगी मित्र श्री शंकरराव कार्नाड़ का जनवरी मास में स्वर्गवास। अक्तूबर मास में पक्षाघात का आकस्मिक आक्रमण, इसके उपरान्त लगभग तीन वर्ष तक रुग्णशैया पर रहे। और वहीं से विभिन्न संस्थाओं, व्यक्तियों की शैक्षणिक समस्याओं का निराकरण करते रहे।

१९३४—हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति की 'क्रमिक पुस्तक मालिका' के ५वें और ६वें भाग की हस्तलिखित प्रति तैयार करने के लिये प्रमुख शिष्य द्वय-श्रीकृष्ण नारायण रातांजनकर तथा वाड़ीलाल शिवराम नायक को आज्ञा प्रदान की।

१९३५—परम मित्र, सहकारी एवं प्रिय शिष्य ठाकुर नवाब अली खान साहब का देहावसान। क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ५ और ६ के लेखन में शिष्य-द्वय को मार्ग दर्शन।

१९३६—क्रमिक पुस्तक मालिका के पाँचवें भाग का मुद्रण प्रारम्भ कर देने की प्रिय शिष्य श्री भालचन्द्र सीताराम सुकथनकर को आज्ञा। इस पुस्तक के प्रूफ संशोधन का कार्य भी करते रहे।

गणेश चतुर्थी, शनिवार, दिनांक १९ सितम्बर १९३६ के पुनीत पर्व पर प्रातः ५ बजे शान्ताराम हाउस, मलबार हिल, बम्बई में महाप्रयाण।

(श्री भालचन्द्र सीताराम सुकथनकर बी० ए०, एल० एल० बी०, सालिसिटर, बम्बई द्वारा लिखित 'माइल स्टोन्स इन् द लाइफ आफ पं० भातखण्डे' के आंशिक आधार पर)

भातखण्डे वंशावली

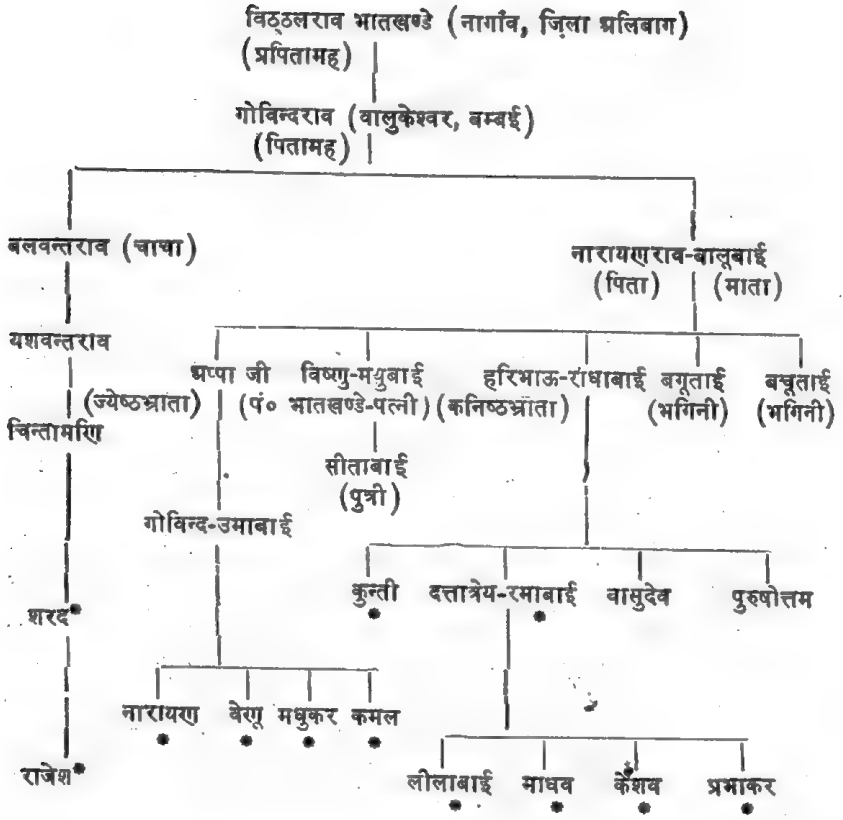

उपरोक्त वंशावली श्री माधव दत्तात्रेय भातखण्डे द्वारा उपलब्ध हुई है। चिन्हांकित व्यक्ति जीवित हैं।

—सम्पादक

पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा

निर्मित साहित्य

क्रमांक	पुस्तक का नाम	प्रकाशन वर्ष	पृष्ठसंख्या
१	—श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम् (संस्कृत में)	१९१०	२००
२	—अभिनवरागमञ्जरी (संस्कृत में)	१९२१	४५
३	—अष्टोत्तरशततालललक्षणम् (संस्कृत में)	१९११	१७
४	—हिन्दुस्तानी सगीत पद्धति भाग १ (मराठी और गुजराती भाषा में)	१९१०	३९४
५	—हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति भाग २	१९१४	५००
६	—हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति भाग ३	१९१४	४७८
७	—हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति भाग ४	१९३२	११३६
८	—लक्षणगीत संग्रह भाग १ से ३	१९११	१२५
९	—स्वरमालिका संग्रह	१९०९	१४०
१०	—गीतमालिका भाग १ से २३	१९१६ से १९२३	५७५
११	—हिं० सं० पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका भाग १	१९१९	६०
१२	—हिं० सं० प० क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २	१९२१	५००
१३	—हिं० सं० प० क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ३	१९२२	७८६
१४	—हिं० सं० प० क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ४	१९२३	८५७
१५	—हिं० सं० प० क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ५	१९३७	४७७
१६	—हिं० सं० प० क्रमिक पुस्तक मालिका भाग ६	१९३७	५००
१७	—Short Historical Survey	१९१६	५१
१८	—Comparative Study	१९३०	११२

सूचना—इनके अतिरिक्त कुछ प्रदीर्घ लेख इस ग्रंथ में पुनर्मुद्रित हो रहे हैं। शेष लिखित साहित्य में अपनी शोधयात्राओं का विषद् वर्णन दैनंदिनियों द्वारा वे लिख रखते थे जो अभी तक अप्रकाशित है। यह साहित्य अनुमानतः दो-ढाई हज़ार पृष्ठों से अधिक होना चाहिये।

पं० भातखण्डे द्वारा संपादित अन्य लेखकों के प्रकाशन

१. स्वरमेलकलानिधि, २. चतुर्दंडिप्रकाशिकासारः, ३. संगीत रत्नाकरः, ४. संगीत-दर्पणम्, ५. अनूपसंगीतविलासः, ६. अनूपसंगीत रत्नाकरः, ७. अनूपसंगीतांकुशः, ८. सद्राग-चंद्रोदयः, ९. संगीत सारामृतोद्धारः, १०. रागलक्षणम्, ११. रागमाला, १२. राग मंजरी, १३. हृदय कौतुकम्, १४. हृदयप्रकाशः, १५. रागतरंगिणी, १६. रागकल्पद्रुमांकुरः, १७. रागचंद्रिका, १८. चन्द्रिकासार, १९. सङ्गीतसुधाकरः, २०. अभिनवतालमंजरी, २१. चत्वारिंशच्छतरागनिरूपणम्, २२. सङ्गीतपारिजातप्रवेशिका, २३. रागविबोध प्रवेशिका, २४. राग तत्वविबोध, २५. सुगमरागमाला, २६. नादोदधि आदि आदि।